❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।
ऋग्वेद 1/15/5

हे प्रभो! आपकी मित्रता अटूट और अमृत है।

O Lord !
your friendship is ever lasting and divine.

वर्ष 40, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 दिसम्बर, 2016 से रविवार 25 दिसम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

बंगाल ! जारी है हिंसा और पलायन

सहन करने की सीमा आखिर समाप्त होगी या नहीं?

साइबेरियन पक्षियों की तरह अवार्ड लौटने वाले पत्रकार, साहित्यकार, लेखक वापस अपने घर लौट चुके हैं। हैदराबाद, दादरी और जेएनयू की तरफ दौड़ने वाले बुद्दिजीवी पत्रकार पिछले कई दिनों से बंगाल के धुलागढ़ का रास्ता पूछ रहे हैं। खबर है कि कोलकाता से मात्र 28 किलोमीटर दूर हावड़ा जिले के धुलागढ़ इलाके के बानिजुपोल गाँव में पिछले मंगलवार को मिलाद-उल-नबी के जुलूस के दौरान जुलूस में शामिल लोगों ने घरों में बम फेंके, तोड़फोड़ की लूटपाट कर लोगों के घरों से नकदी और कीमती सामान चुराकर ले गये। जिस कारण हिन्दुओं का एक बड़ा वर्ग वहां से पलायन कर रहा है। फिलहाल प्रशासन मौन है और वहां की मुख्यमंत्री नोटबंदी में उलझी हैं। एक अखलाक पर यू.एन.ओ को चिट्ठी लिखने वाले उत्तर प्रदेश के बड़े नेता की इस मामले में शायद कलम की स्याही सूख चुकी है। इस मामले में न तो पिछले हफ्ते से मीडिया की वो मेज सजी दिखी जिन पर बैठकर लोग सहिष्णुता पर लम्बे-लम्बे वक्तव्य दे रहे होते हैं। दादरी जाकर मोटी रकम के चेक थमाने वाले नेता शायद बंगाल के धुलागढ़ का रास्ता भूल गये हों!

साम्प्रदायिक हिंसा के बीच आज धुलागढ़ अकेला है। उजड़े हुए घर और बर्बादी का मंजर है। जिसे लोग वहां आसानी से देख सकते हैं। गाँव में पसरा सन्नाटा इस बात का गवाह है कि हिंसा का मंजर कितना खौफनाक रहा होगा। असहिष्णुता के वो ठेकेदार जो पिछले दिनों जे.एन.यू. से एक 'नजीब' के गायब होने पर मीडिया की मेज पर कब्जा जमाये बैठे थे आज सैकड़ों निर्दोष गाँववासियों के पलायन पर मौन क्यों? पलायन के आंकडे उठाकर देखे तो 'सोनार बांग्ला बर्बाद बांग्ला' बन गया है। बंगाल में आज वो हो रहा है जो शायद कभी मुस्लिम आक्रांताओं के समय में भी नहीं हुआ होगा! पिछले दिनों ममता सरकार द्वारा दुर्गा पूजा पर अभूतपूर्व प्रतिबन्ध लगाये गए थे। उच्च न्यायलय के हस्तक्षेप के कारण हिन्दू समाज ने चौन की सांस ली थी। परन्तु, मुस्लिम पर्सनल बोर्ड द्वारा भड़काए गए जेहादियों ने मुस्लिम बाहुल क्षेत्रों में हिंसा का अभूतपूर्व तांडव किया। बंगाल के पचासियों स्थानों पर हिन्दुओं पर अभूतपूर्व अत्याचार किये थे। मालदा जिले के कालिग्राम, खराबा, रिशिपारा, चांचलय मुर्शिदाबाद के तालतली, घोसपारा, जालंगी, हुगली के उर्दिपारा, चंदन नगर, तेलानिपारा, 24 परगना के हाजीनगर, नैहाटीय पश्चिम मिदनापुर गोलाबाजार, खरकपुर, पूर्व मिदनापुर के कालाबेरिया, भगवानपुर, बर्दवान के हथखोला, हावड़ा के सकरैल, अन्दुलन, आरगोरी, मानिकपुर, वीरभूम के कान्करताला तथा नादिया के हाजीनगर आदि पचास से ज्यादा स्थानों पर हिन्दुओं पर अमानवीय अत्याचार किए गए थे।

– शेष पृष्ठ 6 पर

.....जब मक्का में गैर मुस्लिमों ने प्रोफेट मोहम्मद से कहा कि आप और हम मक्का में साथ-साथ रह सकते हैं, किन्तु मोहम्मद ने कहा यह नहीं हो सकता, आपका धर्म अलग है, रहन-सहन अलग है, हम साथ नहीं रह सकते और यहीं से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का जन्म हुआ। वहां अब कोई जूं नहीं बचे, न कोई यहूदी बचे। ईरान में पारसी नहीं बचे, अफगानिस्तान में, बलूचिस्तान में, पाकिस्तान में कहीं हिन्दू नहीं बचे। लाहौर सिक्ख महानगर था, अब नहीं है। वही क्रम आज भी जारी है। कश्मीर में, कैराना में, केरल में, प.बंगाल में क्या हो रहा है?....

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला- 2017 के अवसर पर प्रगति मैदान में

वैदिक साहित्य प्रचार का 9 दिवसीय महायज्ञ

मात्र 10/- रु. में जन साधारण तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने हेतु आप भी अपनी आहुति अवश्य दें

आपकी एक आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

स्टाल उद्घाटन
7 जनवरी, 2017
प्रात: 11:30 बजे

हिन्दी : हॉल नं. 12ए
स्टाल : 267-276

अंग्रेजी साहित्य
हॉल नं. 18 स्टाल : 304

मेला समापन
15 जनवरी, 2017
रात्रि 8 बजे

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अत: आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें। सत्यार्थ प्रकाश में छूट प्रदान करने वाले महानुभावों की सूची पृष्ठ 5 पर प्रकाशित की गई है। आप भी अपना सहयोग यथाशीघ्र भेजें।

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग प्रदान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900 एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री अनिरुद्ध आर्य मो. 9540040339 अथवा श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। *– महामन्त्री*

जन साधारण से अपील : अपने परिवार, इष्टमित्रों एवं सहयोगियों के साथ सुविधानुसार मेले में अवश्य पहुंचें तथा सभी को प्रेरित करें

वेद-स्वाध्याय

नदी के पार

अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमो अशिवा ये असन्शिवान् वयमुत्तरेमाभिवाजान्।। -यजुः. 35/10
ऋषिः **भृगुः।।** देवताः **अग्निः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **अश्मन्वती**= पत्थरों, शिलाओं वाली नदी **रीयते**=वेग से बह रही है। **सखायः**=हे साथियो, मित्रो! **उत्तिष्ठत**= उठो, **संरभध्वम्**=मिलकर एक -दूसरे को सहारा दो और **प्र तरत**= इस नदी को प्रबलता से तर जाओ। आओ, **ये अशिवाः असन्**=जो हमारे अकल्याणकर संग्रह हैं उन्हें हम **अत्र जहीमः**= यहीं छोड़ दें और **शिवान् वाजन् अभि**= कल्याणकारी सुखों, बलों और ज्ञानों को पाने के लिए **वयम्**=हम **उत्तरेम**=इस नदी के पार हो जाएँ।

विनय-भाइयो! सांसारिकता की नदी बड़े वेग से बह रही है। अपने अभीष्ट सुखों को, सच्चे भोगों को, बलों को हम इस नदी के पार पहुँचकर ही पा सकते हैं, पर हमें बहाये लिये जानेवाले विषयों के इस भारी प्रवाह को तर जाना भी आसान कार्य नहीं है। यह नदी बड़ी विकट है। इसमें पड़े हुए भोग्य-पदार्थों के बड़े-बड़े और फिसलानेवाले चिकने पत्थर हमारे पैरों को जमने नहीं देते। इधर शिलाओं की ठोकर खाकर पग-पग पर गिर पड़ने का डर है, उधर नदी का वेग हमें बहाये लिये जाता है, परन्तु पार पहुँचे बिना हमें सुख-शान्ति भी नहीं मिल सकती, अतः भाइयो! उठो, मिलकर एक-दूसरे को सहारा देते हुए आगे बढ़ो। हिम्मत करके उठ खड़े होओ और दृढ़ता के साथ प्रबल यत्न करते हुए इस नदी के पार उतर जाओ, परन्तु सबसे बड़ी विपत्ति तो यह है कि पहले ही पत्थरोंवाली और वेगवती इस नदी के पार उतरना इतना मुश्किल हो रहा है, ऊपर से हमने अपने बहुत-से 'अशिव' संग्रहों का बोझ भी सिर पर लाद रखा है। भोगेच्छा, कुसंस्कार, अधर्म की वासना तथा पापों के भारी बोझ से हमने अपने को बोझिल बना रखा है। इसके कारण हमारा पार उतरना असम्भव हो रहा है। आओ साथियो! भाइयो! पहले हम इन सब 'अशिव' वस्तुओं को यहीं फेंक दें। इन्हें छोड़कर हल्के हो जाएँ जिससे कि हम नदी पार उतरने के लिए आसानी से अपनी पूरी शक्ति लगा सकें। जितने शुभ, कल्याणकारी 'वाज' हैं, सच्चे भोग हैं, बल हैं, ज्ञान हैं, वे तो हमारे लिए बहुतायत में नदी के पार विद्यमान हैं, हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। फिर हम मूर्ख लोग इन 'अशिव' वस्तुओं को किसलिए उठाये हुए हैं? यह बोझ तो हमें डुबा देने में ही सहायक होगा। यदि इस बोझ के साथ हम स्वयं डूब मरना या नदी-प्रवाह हो जाना नहीं चाहते तो हमें इन सब बुराइयों का तो यहीं नदी-प्रवाह कर देना चाहिए। इन 'अशिव' संग्रहों के बोझ से छुटकारा पाकर हमें एक-दूसरे को सहारा देते हुए आगे बढ़ना चाहिए। विषयों के प्रबल प्रवाह से बचने के लिए हम सबको परस्पर एक-दूसरे के 'संरम्भ' (आश्रय) की आवश्यकता है। हे कल्याण चाहनेवालो! यह नदी चाहे कितनी विकट हो, परन्तु इसे पार किये बिना कोई चारा नहीं है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

फिर स्वामी श्रद्धानन्द प्रासंगिक हैं

भारत की कैथोलिक चर्च ने पहली बार आधिकारिक तौर पर माना है कि दलित ईसाइयों को छूआछूत और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। ''द इंडियन एक्सप्रेस'' के मुताबिक ये जानकारी नीतिगत दस्तावेजों के जरिए सामने आई है। इसमें कहा गया है, ''उच्च स्तर पर नेतृत्व में दलित ईसाइयों की सहभागिता न के बराबर है।'' अखबार के मुताबिक ये दस्तावेज कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया में जारी किए गए। ये समुदाय की सर्वोच्च निर्णायक संस्था है। कहने को तो यह संस्था सामाजिक तौर पर पिछड़े लोगों से हर तरह से भेदभाव खत्म करने और उनके उत्थान के लिए प्रयास करती है। लेकिन इसका मूल उद्देश्य गरीब और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को ईसाइयत में परिवर्तन करना है। इस खबर को पढ़कर अब स्वामी श्रद्धानंद पुनः प्रासंगिक हो जाते हैं।

आज देश व सर्व मजहबों के मालिकों को समझ जाना चाहिए कि जातीय समस्या धर्म का नहीं बल्कि समाज की एक बुराई का वि ाय है यह बुराई सामाजिक है तो हल धार्मिक कैसे? इस समस्या का समाधान किसी का धर्म परिवर्तन करना नहीं बल्कि स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा जो आह्वान किया गया ठीक उसी तरह। सब जानते हैं कि डॉ. अम्बेडकर से दशकों पहले आर्य समाज ने दलितोद्धार का सन्देश दिया था। धार्मिक स्तर पर लोगों को जागरूक कर बताया कि वेद का सन्देश ईश्वर द्वारा ब्राह्मणों से लेकर शूद्रों सभी के लिए दिया गया है और सामाजिक स्तर पर भी उनके साथ भोज कर छुआछूत पर प्रहार किया। स्थान-स्थान पर विद्यालय और गुरुकुल खोले गये जिससे शिक्षा के माध्यम से समाज में उच्च स्थान प्राप्त हो सके, आत्म निर्भर बनाने के लिये उद्योग स्थापित किये गये, मंदिरों, सार्वजानिक कुओं में प्रवेश आरम्भ किया गया तथा सहभोज आरम्भ किये गये जिसमें दलित भाई के हाथ से ब्राह्मण भोज करते थे।

दरअसल छोटी-बड़ी जाति एक सोच है कि यह इन्सान छोटा या बड़ा, छूत-अछूत है। लेकिन इन लोगों द्वारा उनका धर्मपरिवर्तन कर इससे बाहर निकलने के लिए दूसरी समस्या खड़ी कर दी गयी। पहली समस्या सिर्फ भेदभाव तक सिमित थी किन्तु दूसरी समस्या संघर्ष खड़ा करती है और हिंसा की ओर अग्रसर करती है। अगर इतिहास उठाकर देखा जाए तो पता चलेगा कि मुख्यतः धर्म परिवर्तन के शिकार ज्यादातर वे ही लोग होते हैं जो गरीब अशिक्षित समुदाय और आदिवासी समुदायों से सम्बन्ध रखते हैं। आदिवासियों को बड़े स्तर पर इस धर्म से उस धर्म में खींचने का प्रयास चलता रहता है। ये संगठन इन लोगों पर मजहब तो थोप देते हैं लेकिन इन तबकों के सामाजिक और आर्थिक तरक्की की बात नहीं करते हैं न ही ये संगठन जातीय व्यवस्था के खात्मे की बात करते हैं। अफसोस इस बात का भी है कि बड़े-बड़े दलित नेता भी इस साम्प्रदायिक मुहीम के खिलाफ कुछ कारगर कदम नहीं उठाते हैं। क्योंकि इस मुहीम के पीछे एक राजनीतिक मंशा छिपी हुयी है यानी वोट की राजनीति के लिए कोई किसी को नाराज नहीं करना चाहता है। वरना उस समाज को उसी स्तर पर शिक्षा, स्वास्थ, रोजगार के अवसर देकर उसे गले लगाकर सामाजिक उन्नति भी की जा सकती है। जातीय समस्या का हल मजहब बदलना नहीं है। इसका तो राजनैतिक हल होना चाहिए बेहतरीन शिक्षा बेहतर नागरिक मूल्य व्यापक रोजगार का सृजन यदि नहीं होगा तब तक राजनैतिक और धार्मिक शोषण बंद नहीं होगा।

किसी भी छिटपुट हिंसा के बाद अक्सर दलितों को बौद्ध, ईसाई या मुस्लिम बन जाने से मुक्ति मार्ग समझाया जाता है। दलितों के बौद्ध या ईसाई बनने से क्या होगा? कुछ नहीं, मंदिरों की जगह नये पगोडा-बौद्ध मठ या चर्च बढ़ जायेंगे घंटी की जगह हाथ से घुमाने वाला झुनझुना होगा या गले में क्रॉस चिन्ह और मुंह में ऊं मनि पद्मे हुमष् मंत्र होगा। लेकिन पुकारने का शब्द नहीं बदलता। अरे देखो ये वही है! बौद्ध, ईसाई के खोल में छुपा दलित! इसलिए फिर वही बात दोहराते हैं कि यह समस्या सामाजिक है इसमें धर्म का कोई हस्तक्षेप नहीं है। एक ही सम्प्रदाय में मस्जिदें अलग-अलग हैं, चर्चों में भेदभाव है। कैथोलिक बेपिस्ट को बिल्कुल पसंद नहीं करता और शिया-सुन्नी को।

जब-जब राष्ट्र और समाज पर विपदा आती है तो एक शिक्षक सबसे पहले जागता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी जानते थे अशिक्षा और गरीबी जहाँ होती है वहां बहुत जल्दी धर्म के ढोल बजबजाते हैं। स्वामी जी इन लोगों के धार्मिक षडयंत्र को समझ गये थे कि दलित पिछड़ों का धर्मांतरण कर रही मिशनरीज को किसी गरीब व दलित की बिल्कुल चिंता नहीं है बल्कि इन्हें चिंता है अपने सम्प्रदाय की जिसकी संख्या ये लोग यहाँ बढ़ाकर राज करना चाहते हैं। २० मई सन १९२४ को मद्रास के गोखले हाल में मर्म स्पर्शी भाषण देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था कि, ''पुरोहित आदि के अहंकार के कारण आपके यहा ब्राह्मण ब्राह्माणेतरो का झगड़ा तो चल ही रहा था कि अब उससे भी अधिक बुरा एक झगड़ा आपके सामने खड़ा होने वाला हैं। यदि आपने अस्पृश्य कहे जानेवाले भाईयों के उद्धार की और विशेष ध्यान न दिया तो मैं आपको सचेत करता हूँ की वह दिन दूर नहीं, जब आपके दलित भाई जिन्हें आप पंचम कहते हैं, आप से सब तरह का सम्बन्ध तोड़ देंगे। यह तो सब के सब दूसरे सम्प्रदायों में चले जायेंगे अथवा अपनी जाति ही अलग बना लेंगे। मैं स्वयं कमजोर, रोगी और वृद्ध होता हुआ सारे देश में घूम जाऊँगा। दलित भाईयों का संगठन करूँगा और उनसे कहूँगा की वे हर ब्राह्मण और अब्राह्मण को स्पर्श करके वैसा ही भ्रष्ट कर दें जैसा आप उनको मानते हैं। तब निश्चय ही आप उनके पैरों में माथा टेक देंगे।'' इस प्रकार की क्रन्तिकारी विचार रखने वाले स्वामी श्रद्धानंद के अस्पृश्यता को बढ़ावा देने वाले लोगो के मुँह पर करारा तमाचा मारा था।

- सम्पादकीय

पहरेदारों की पहरेदारी कौन करेगा?

आज देश विमुद्रीकरण के दौर से गुजर रहा है। 8 नवम्बर को प्रधानमंत्री जी के आह्वान के बाद पूरा राष्ट्र इस राष्ट्र निर्माण यज्ञ में भ्रष्टाचार रूपी रोग को खत्म करने के लिए कतार में खड़ा हो गया किन्तु विडम्बना देखिये नोट बदली यानि विमुद्रीकरण काला धन खत्म करने के लिए था, परन्तु इस नोट बदली में ही करप्शन हो गया! इसका मतलब जब दवा बीमार है तो मरीज कैसे ठीक होगा? या कहो इन पहरेदारों की पहरेदारी कौन करेगा? कोई भी राष्ट्राध यक्ष नीति नियंता होता है। वह राष्ट्र को आगे ले जाने के लिए नीतियाँ बनाता है उसको लागू करने का अधिकार क्षेत्रीय अधिकारियों को प्रदान किया जाता है ताकि वह नीतियाँ जन-जन तक पहुँच सकें उसका लाभ सबको मिल सके। किन्तु जिस तरीके से बैंक कर्मियों ने नोटबंदी में अपनी भूमिका निभाई उसे देखकर गरीब आदमी जरूर कहीं ना कहीं खिन्न दिखाई दे रहा है।

ताजा प्रसंग के संदर्भ में यदि बात करें तो हाल के एक महीने ने यह साबित कर दिया कि यदि किसी देश का शाशक ईमानदार हो तो भी वहां भ्रष्टाचार हो सकता है। अभी चलन से बाहर किए गए नोटों को अवैध रूप से बदलने में शामिल रैकेट का पर्दाफाश करते हुए ईडी ने धनशोधन मामले में जांच के तहत सरकारी अधि ाकारियों समेत सात कथित बिचौलियों को गिरफ्तार किया है और कर्नाटक में 93 लाख रुपए के नए नोट बरामद किए हैं।

गौरतलब है कि नोटबंदी की घोषणा के बाद जहां कई जगहों से 500 और 1000 के बंद किए जा चुके नोट बरामद हुए हैं तो कुछ जगहों से नए 2000 रुपये के नोटों में बड़ी धनराशि पकड़ी गई है। आयकर विभाग ने छापा मारकर विभिन्न स्थानों से 106 करोड़ रुपये की नकदी और 127 किलो सोना पकड़ा। इसमें से 10 करोड़ रुपये की नई नकदी शामिल थी।

पिछले हफ्ते नई दिल्ली के निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से कुछ लोगों को 27 लाख के 2000 रुपये के नए नोटों के साथ गिरफ्तार किया गया था। वहीं गुजरात में करीब पौने तीन लाख के 2000 रुपये के नए नोटों में घूस लेते दो अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया था। यदि पूरे महीने का मोटा सा भी रिकार्ड देखें तो 8 दिसम्बर चेन्नई 10 करोड़, 07 दिसम्बर गोवा 1.5 करोड़, 29 नवंबर कोयंबटूर 1 करोड़, 09 दिसम्बर सूरत 76 लाख, 07 दिसम्बर उडुपी 71 लाख 09 दिसम्बर मुंबई 72 लाख होशंगाबाद 40 लाख 08 दिसम्बर गुड़गांव 27 लाख रूपये पकड़े गये। इसमें कोई संदेह या प्रश्न नहीं है कि ये मोटी रकम बिना बैंक अधिकारियों की मिली भगत के बदली गयी हो। अब सवाल यह है कि प्रधानमंत्री जी की इस काले धन पर की गयी पहल पर भ्रष्ट अधिकारियों ने जो खेल भ्रष्टाचार का दिखाया उसकी जाँच कौन करेगा या अब कहो इन पहरेदारों की पहरेदारी कौन करेगा?

जब रोम साम्राज्य अपने वैभव की बुलंदियाँ छू रहा था, तब उसकी सरकार उस जमाने की सबसे बड़ी ताकत थी। रोम के कानून इतने बढ़िया थे कि आज भी कई देशों के कानून उसी से लिए गए हैं। रोम की इस कामयाबी के बावजूद,जो रोम उस समय बड़ी-बड़ी ताकतों से नहीं हार पाया वह रोम अन्दर की एक बीमारी से हार गया। वह था भ्रष्टाचार। आखिर में इसी दुश्मन के हाथों रोम बरबाद हो गया। भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग, दरअसल उसूलों की लड़ाई है। इसलिए यह जंग जीतने के लिए सिर्फ भ्रष्टाचार विरोधी कानून बनाना या बन्दूक या किसी सजा का डर दिखाना काफी नहीं है। किसी की हत्या करने पर मृत्यु दण्ड तक का कानूनी प्रावधान है लेकिन हत्या फिर भी होती है इसका मतलब अपराधी लोग सजा से नहीं डरते किन्तु मानवीय द्रष्टिकोण रखने वाले लोग एक चींटी को भी नहीं मारते जबकि वह कोई कानूनी अपराध नहीं है। भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने के लिए एक और कदम उठाना जरूरी है, जो इतना आसान नहीं है। वह है लोगों के दिलों में बदलाव लाना। देश-देश के लोगों को अपने मन में घूसखोरी और भ्रष्टाचार के लिए नफरत पैदा करनी चाहिए, तभी यह काली कमाई खत्म होगी।

.....जब रोम साम्राज्य अपने वैभव की बुलंदियाँ छू रहा था, तब उसकी सरकार उस जमाने की सबसे बड़ी ताकत थी। रोम के कानून इतने बढ़िया थे कि आज भी कई देशों के कानून उसी से लिए गए हैं। रोम की इस कामयाबी के बावजूद,जो रोम उस समय बड़ी-बड़ी ताकतों से नहीं हार पाया वह रोम अन्दर की एक बीमारी से हार गया। वह था भ्रष्टाचार। आखिर में इसी दुश्मन के हाथों रोम बरबाद हो गया। भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग, दरअसल उसूलों की लड़ाई है। इसलिए यह जंग जीतने के लिए सिर्फ भ्रष्टाचार विरोधी कानून बनाना या बन्दूक या किसी सजा का डर दिखाना काफी नहीं है।.....

50 दिन में अभी कुछ दिन शेष बचे हैं। विपक्ष सरकार पर हावी है क्योंकि उसे पिछले दो-ढाई साल में सरकार की टांग खींचने के लिए पहली बार राजनैतिक स्तर का मुद्दा मिला है वरना अभी तक तो वह अपना काम कुत्ता, पिल्ला, असहिष्णुता, सूट-बूट आदि जैसे मुद्दे उठाकर अपने वोट बैंक को बचाता दिख रहा था लेकिन इस बार उसे 50 दिन का इंतजार है और उसे उम्मीद है कि इस बार भाजपा के वोट बैंक में भी सेंध लग सकती है। हाँ जिस तरीके से विमुद्रीकरण नीति में खेल किया उससे उनका दावा मजबूत होता दिखाई दे रहा है। सरकार को अब जल्द बड़े और कड़े कदम उठाने होंगे वरना गरीब आदमी का सरकार से वो विश्वास जरूर डोल जायेगा जिसके सहारे वह लाईन में खड़ा अपनी बारी का इंतजार कर रहा है।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

हम तो चाखा प्रेम-रस, पत्नी के उपदेश

गोस्वामी तुलसीदास के जीवन की वह घटना तो शायद आपने सुनी हो। युवक तुलसी का विवाह हुआ। पत्नी से उन्हें अत्यधिक प्यार था। इसके अतिरिक्त दूसरी कोई बात उन्हें सूझती नहीं थी।

एक दिन पत्नी के पिता हुए बीमार। वह उन्हें मिलने के लिए मायके चली गई। एक दिन बीता, दूसरा दिन बीता, परन्तु तुलसी के लिए चैन कहाँ? ऐसा प्रतीत हुआ जैसे जीवन की ज्योति बुझ गई है, अँधेरा छा गया है। तीसरे दिन रात हुई तो वे अधिक सहन नहीं कर सके। अँधेरी रात में घर से निकले। सामने नदी थी। नदी के उस पार गाँव था जिसमें उसकी पत्नी रहती थी। नौका तो कोई थी नहीं। अँधेरे में टटोला तो एक लकड़ी-सी मिली। उसका सहारा लेकर तैरकर परले किनारे पहुँच गये। किनारे के साथ ही पत्नी के पिता का घर था, परन्तु रात के समय द्वार बन्द था। आवाज़ नहीं दी कि लोग क्या कहेंगे! पत्नी की खिड़की के पास पहुँचे तो देखा कि ऊपर से एक मोटा-सा रस्सा लटक रहा है। उसी को पकड़ कर ऊपर पहुँच गये। खिड़की से कूदकर पत्नी के कमरे में पहुँचे, तो आवाज़ से पत्नी जाग उठी, बोली-''कौन है?''

तुलसी ने धीरे से कहा-''मैं हूँ, तुलसी।'' पत्नी ने जल्दी से उठकर दीप जलाया। प्रकाश हुआ। अपने पति को देखकर बोली-''महाराज! आप इस समय? परन्तु आप ऊपर कैसे आये, द्वार तो बन्द है?''

तुलसीदास बोले-''तुमने जो रस्सा खिड़की के साथ लटका रक्खा है, उसी को पकड़कर आया हूँ।''

पत्नी ने कहा-''रस्सा! मैंने तो कोई रस्सा नहीं लटकाया। आओ देखूँ तो!''

और दीपक के प्रकाश में देखा तो एक साँप था जो सरककर ऊपर जा रहा था। पत्नी ने भयभीत होकर कहा-''यह है वह रस्सी, जिसे पकड़कर आप ऊपर आये? और इस अँधेरी रात में आपको नदी पार करने के लिए नौका कहाँ मिल गई?''

तुलसीदास बोले-''नौका नहीं, एक लकड़ी मिली थी। उसी का सहारा लेकर आया हूँ।'' पत्नी ने दीपक के प्रकाश में नदी-किनारे को देखा। ध्यान से उस लकड़ी को देखा जो अब भी नदी के किनारे पड़ी थी। चौंकर बोली-''पतिदेव! क्या यही वह लकड़ी है?''

तुलसी बोले-''हाँ,यही तो है!''

पत्नी ने कहा-''महाराज,ध्यान से देखिये, यह लकड़ी नहीं, किसी व्यक्ति की लाश है, अकड़ गई है।''

तुलसी हँसकर बोले-''यह तो मेरे प्यार का प्रमाण है। प्रेम के कारण मैंने लाश को लकड़ी समझा, साँप को रस्सी। मुझे तुम्हारे पास पहुँचना था सो पहुँच गया।'' पत्नी ने कहा-''महाराज! हाड़ और चाम के इस शरीर से जितना प्यार आपने किया, इतना यदि प्रभु से करते तो कहीं-से-कहीं पहुँच जाते।''

हाड़ मांस की देह मम, ता पर जितनी प्रीति। तिसु आधो जो राम प्रति, अवसि मिटिहि भवभीति।।

तुलसीदास के हृदय को धक्का लगा; बोले-''फिर कहो देवी! क्या कहा तुमने?''

पत्नी ने फिर वही बात दोहरा दी। तुलसीदास फिर बोले-''एक बार और कहो, देवि!''

पत्नी ने तीसरी बार भी वही बात कह दी और तुलसीदास ने हाथ जोड़ दिये, सिर झुका दिया। आँसू-भरी आवाज़ में बोले-''मैं सोया हुआ था, तुमने मुझे जगा दिया। आज से तुम मेरी पत्नी नहीं, गुरु हो! अब मैं भगवान् का दर्शन ही करूँगा, नहीं तो यह जीवन उनका नाम लेते-लेते व्यतीत कर दूँगा।''

इस प्रकार वे रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास बने और संसार को 'तुलसी रामायण' जैसा ग्रन्थ मिला।

प्रेम जाग उठे मन में,
तो यह सब कुछ होता है।
कटे एक रघुनाथ संग,
बाँधि जटा सिर केस।
हम तो चाखा प्रेम-रस, पत्नी के उपदेश।।

साभार: बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द : एक तुलनात्मक अध्ययन

- डॉ. विवेक आर्य

मैंने स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द को लेकर एक शंका प्रस्तुत की थी। अनेक मित्रों ने अपने अपने विचार प्रकट किये। सभी का धन्यवाद। मैंने यह प्रश्न क्यों किया? इस पर चर्चा करनी आवश्यक है। दोनों महापुरुषों के विचारों में भारी भेद हैं। इसलिए इस विषय पर चिंतन की आवश्यकता है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य सत्य को ग्रहण करना एवं असत्य का त्याग करना है। इसलिए हम भी उसी का अनुसरण करें। यही इस लेख का भी उद्देश्य है।

1. स्वामी दयानन्द वेदों को ईश्वरीय वाणी होने के कारण सत्य मानते हैं। स्वामी दयानन्द ने यह मान्यता वर्षो के अनुसन्धान, चिंतन, मनन एवं निधिध्यासन के पश्चात् स्थापित की थी। एक अनुमान से स्वामी दयानन्द ने 5000 धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन उस काल में किया था जिसमें से 3000 पुस्तकें उन्हें उपलब्ध थीं। स्वामी विवेकानन्द का वेदों में प्रवेश नहीं था। वे अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस द्वारा मान्य मूर्तिपूजा पद्धति एवं काली पूजा और वेदांत के उपासक थे। इसलिए स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा केवल पुराणों और वेदांत तक सीमित थी।

2. स्वामी दयानन्द ने पुराणों को मनुष्य कृत सिद्ध किया। स्वामी जी ने बताया कि पुराण अनेक काल में विभिन्न मनुष्यों द्वारा रचे गए। पुराणों के रचनाकारों ने अपना नाम न देकर व्यास कृत दिखाकर एक अन्य प्रपंच किया था। पुराणों में वेद विरुद्ध मान्यताएं, परस्पर विरोध, देवी-देवताओं के विषय में अपमानजनक बातें जैसे उन्हें कामुकी, चरित्रहीन बताना, अज्ञानी बताना, परस्पर शत्रुता भाव आदि देखकर उन्हें कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति धार्मिक ग्रन्थ नहीं मान सकता। स्वामी विवेकानन्द ने इतना गंभीर चिंतन पुराणों में धर्म-अधर्म विषय को लेकर नहीं किया था।

3. स्वामी दयानन्द ने अपने अनुसन्धान से यह सिद्ध किया कि वेदों में गोमांस भक्षण और यज्ञ में पशुबलि आदि का उल्लेख नहीं है। मध्यकाल में सायण-महीधर आदि ने वेदों के गलत अर्थ कर यह प्रपंच फैलाया। स्वामी विवेकानन्द वेदों में गोमांस भक्षण और पशुबलि आदि स्वीकार करते हैं। वे यहाँ तक लिखते हैं कि प्राचीन काल में भारत देश इसलिए महान था क्योंकि यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी और ब्राह्मण गोमांस भक्षण करते थे। संभवत: उनकी बंगाली पृष्ठभूमि उन्हें इस मान्यता को स्थापित करने में सहायता करती थी। गोरक्षा के मुद्दे पर आपको कभी भी स्वामी विवेकानन्द का नाम लेते नहीं दिखेगा। स्वामी दयानन्द का वेद और गोमांस के सम्बन्ध में चिंतन सभी को स्वीकारीय है।

4. स्वामी दयानन्द ने अपने भागीरथ अनुसन्धान से यह सिद्ध किया कि वेदों के जो भाष्य पश्चिमी लेखक जैसे मैक्समूलर आदि कर रहे हैं, वे भ्रामक हैं। उनसे वेदों की प्रतिष्ठा की हानि होगी। स्वामी दयानन्द मैक्समूलर महोदय को साधारण विद्वान् की श्रेणी का भी नहीं मानते। उन्होंने विदेशी लेखकों के विषय में एक लोकोक्ति के माध्यम से उनके ज्ञान के स्तर का समुचित आंकलन किया था। स्वामी दयानन्द लिखते हैं जिस देश में कुछ भी पैदावार नहीं होती वहां पर अरंडी को भी वृक्ष समान समझा जाता है। वैसा ही स्तर विदेशी लेखकों का वेद सम्बन्ध में ज्ञान को लेकर है। विदेशों में संस्कृत एवं वेद विद्या के ज्ञान से कोई परिचित नहीं है। इसलिए मैक्समूलर आदि लेखक भी बड़े विद्वान् गिने जाते हैं। स्वामी विवेकानन्द वेदों के भाष्यों के विषय में अनुसन्धान से परिचित नहीं थे। अन्यथा वे मैक्समूलर महोदय को आधुनिक सायण की उपाधि देकर महिमामंडन नहीं करते।

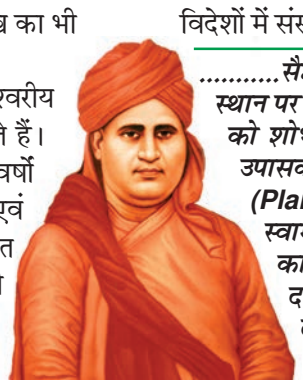

.....सैद्धांतिक भेद होने के कारण भी स्वामी दयानंद के स्थान पर स्वामी विवेकानंद का महिमामंडन करना हिन्दू समाज को शोभा नहीं देता। दयानंद केवल और केवल सत्य के उपासक है। जबकि विवेकानंद सुनियोजित छवि निर्माण (Planned Marketing) के उत्पाद हैं। आज हिन्दू समाज स्वामी दयानंद के विचारों से स्वाध्यायशील न होने के कारण परिचित ही नहीं है। उन्हें कोई भी स्वामी दयानंद के विरुद्ध यह कहकर भ्रमित कर देता है कि स्वामी दयानंद मूर्तिपूजा और पुराणों का विरोध करते थे।.....

5. स्वामी दयानन्द ने पाया कि हिन्दू समाज के पतन का मुख्य कारण मूर्ति पूजा और उससे सम्बंधित अन्धविश्वास है। उन्होंने मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध भी सिद्ध किया। स्वामी दयानन्द ने ईश्वर के निराकार स्वरुप की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना करने का प्रावधान किया। यह मान्यता प्राचीन ऋषि परंपरा के अनुसार थी न कि कल्पित थी। स्वामी विवेकानन्द जीवन भर मूर्तिपूजा का समर्थन करते रहे। उनकी अलवर नरेश के संग वार्तालाप को अधिकाधिक प्रचारित भी इसी उद्देश्य से किया जाता है। उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस भी मूर्तिपूजक थे। विडम्बना देखिये स्वामी दयानन्द जिस अज्ञान रूपी खाई से हिन्दू समाज को निकालना चाहते थे हिन्दू समाज उसी खाई में और अधिक गहरे धसता चला गया। पहले राम और कृष्ण जी की मूर्तियां पूजी जाती थीं फिर कल्पित देव-देवियों जैसे काली, संतोषी माँ आदि को महत्त्व मिला। कालांतर में गुरुओं और मठाधीशों की मूर्तियां स्थापित हुई। वर्तमान में मूर्तिपूजा में क्रमिक विकास हुआ। सभी पिछली स्थापित मूर्तियों का त्याग कर साईं बाबा उर्फ चाँद मियां एक मस्जिद में रहने वाले मुस्लिम फकीर को चमत्कार की आशा से पूजना आरम्भ कर दिया। इससे भी मन नहीं भरा तो अजमेर के मुस्लिम ख्वाजा गरीब नवाज से लेकर भारत वर्ष में स्थित सैकड़ों इस्लामिक कब्रों पर जाकर अपना सर पटकने लगे। क्यों? केवल चमत्कार की आशा से। कर्म करने का जो सन्देश श्री कृष्ण ने गीता में दिया था उसकी धज्जियाँ स्वयं हिंदुओं ने उड़ा दीं। इस मूर्ति पूजा ने हिन्दू को आलसी, अकर्मण्य, अपुरुषार्थी, भोगवादी, अज्ञानी बना दिया। मूर्तियों को भगवान मानकर पूजने से यही हानि होती है। स्वामी दयानन्द अपनी दूर दृष्टि एवं अनुभव से यह समझ गए और हमें समझा गए थे। जबकि स्वामी विवेकानन्द उसी रोग का समाधान करने के स्थान पर उसी को बढ़ावा देते दिख रहे है। कुछ वर्ष पहले मुस्लिम फकीर साईं बाबा की पूजा को हिन्दू दर्शन कहकर स्वीकारीय बताने को आप क्या कहेंगे? कल को हिन्दू समाज में कोई अफजल गुरु और अजमल कसाब का मकबरा बना देगा और हिन्दू उसे पूजने लगेगा। तो क्या उसे भी हिन्दू दर्शन कहकर पूजने की मान्यता देगा? स्वयं चिंतन करे।

6 . स्वामी विवेकानन्द मांसाहारी थे, धूम्रपान के व्यसनी थे। 32 वर्ष की आयु में अस्थमा एवं मधुमेह से उनकी असमय मृत्यु हो गई। मांसाहार के इतने शौकीन थे कि जब अमरीका गए तब केवल मांस खाया। कुछ भक्तों ने पूछा कि आपके मांसाहारी होने से आपके देशवासी नाराज होंगे। स्वामी विवेकानन्द बोले कि जो नाराज होते हों तो मेरे लिए यहाँ पर शाकाहारी भोजन की व्यवस्था कर दे। स्वामी दयानन्द ब्रह्मचर्य और प्राणायाम के बल पर बलिष्ठ शरीर के स्वामी, शाकाहारी होने के साथ-साथ निरामिष भोजी भी थे। योग विद्या के बल पर शारीरिक, आध्यात्मिक उन्नति कर अपने मिलने वालों के समक्ष मनोहर छवि प्रस्तुत करते थे। जिससे उनका सत्संग करने वाले भी अपना जीवन उन्नत करने का प्रयास करें। कोई व्यक्ति अपने नाम के समक्ष स्वामी शब्द लगाता है तो वह किसका स्वामी होता है? धन, सम्पदा और पद का स्वामी तो वह होता नहीं अपितु अपनी इन्द्रियों और मन का स्वामी होता है। स्वामी विवेकानन्द की रुचि मांसभक्षण और धूम्रपान में देखकर उन्हें अपनी इन्द्रियों का स्वामी किसी भी आधार पर नहीं कहा जा सकता। एक मांसाहारी, धूम्रपान व्यसनी सन्यासी को मैं अपना आदर्श किसी भी आधार से नहीं मान सकता।

7. स्वामी विवेकानन्द के विचारों में मुझे कहीं भी एकरूपता नहीं दिखती। एक ओर वे भारतीय दर्शन के ध्वजवाहक हैं वहीं दूसरी ओर विदेशियों की भरपूर प्रशंसा करते दीखते हैं। कभी वे ईसाईयों की आलोचना करते हैं, तो कभी ईसा मसीह के गुणगान करते दीखते हैं। कभी इस्लाम की आलोचना करते हैं, तो कभी मुहम्मद साहिब के गुणगान करते दीखते हैं। कभी अंग्रेजों के भारतीयों को गुलाम बनाने पर निंदा करते हैं, तो कभी अंग्रेजों की प्रशंसा करते दीखते हैं। उनके विचारों में एकरूपता, सिद्धांत की स्थापना जैसा कुछ नहीं दीखता। उनके इसी चिंतन का असर रामकृष्ण परमहंस मिशन पर भी वर्तमान में स्पष्ट दीखता है। 1990 में इस मिशन ने हम हिन्दू नहीं है के नाम से कोर्ट में याचिका दायर कर अपने आपको हिंदुओं से अलग दिखाने का प्रयास किया था। वर्तमान में ईसा मसीह की वाणी और मुहम्मद साहिब के विचार जैसी पुस्तकें इस मिशन द्वारा प्रकाशित होती हैं। सेक्युलर लबादे में अपने आपको लपेट कर दुकानदारी अच्छे से चलती है। स्वामी दयानन्द के समान कड़वे सत्य को बोलने से आलोचना का शिकार होना पड़ता है। मगर योगी लोग मान-प्रतिष्ठा से अधिक सत्य का मंडन और असत्य का खंडन करते हैं। यही कारण है कि सत्य के उपदेशक स्वामी दयानन्द को हिन्दू समाज उतना मान नहीं देता, जितना मान मीठी-मीठी बात करने वाले स्वामी विवेकानन्द को देता है।

8. स्वामी विवेकानन्द के शिकागो भाषण का बड़ा महिमामंडन किया जाता है। कुछ लोग इस भाषण को दुनिया में परिवर्तन करने वाला भाषण करार देते हैं। मैंने 1893 में विश्व धर्म समेल्लन में दिए गए अन्य वक्ताओं के भाषण को पढ़ा। स्वामी विवेकानन्द की उपस्थिति में उसी मंच से अनेक ईसाई वक्ताओं ने वेदों में गोमांस भक्षण और यज्ञों में पशुबलि जैसे विषयों पर वेदों की प्रतिष्ठा को धूमिल करने वाले अनेक भाषों को पढ़ा था। स्वामी विवेकानन्द ने उनका किसी भी प्रकार से प्रतिकार नहीं किया। पाठक इस विषय में स्वयं निणय करें। क्यों? स्वामी विवेकानन्द आलोचना का शिकार नहीं बनना चाहते थे। जहाँ तक कुछ ईसाईयों को वेदान्त में दीक्षित करने का प्रश्न है। साउथ अफ्रीका में प्रवासी हिंदुओं को तेजी से ईसाई बनते देख उन्हें शुद्ध करने वाले भवानी दयाल सन्यासी ने लिखा कि जिस काल में स्वामी विवेकानन्द चंद ईसाईयों को वेदांती बनाने में लगे हुए थे। उसी काल में हजारों की संख्या में अफ्रीका और लैटिन अमरीका में हिंदुओं को ईसाई बनाया गया। मेडागास्कर उपद्वीप में तो एक भी प्रवासी भारतीय हिन्दू नहीं बचा था। स्वामी विवेकानन्द ने ईसाई मिशनरी का कोई प्रतिकार नहीं किया। वहीं पाठक स्वामी दयानन्द द्वारा1869 में हुए सैकड़ों पंडितों उपस्थिति में किये गए काशी शास्त्रार्थ को इतिहास की सबसे बड़ी घटना क्यों नहीं मानते? जब स्वामी दयानन्द ने शताब्दियों से प्रचलित धार्मिक अन्ध विश्वास को मूल से नष्ट करने का संकल्प लिया था। स्वामी दयानन्द पद, धन, प्रतिष्ठा आदि किसी भी प्रकार के प्रलोभन में नहीं आये। उन्हें प्राण हानि तक का खतरा था। काशी नरेश से लेकर सभी पंडित अपनी रोजी-रोटी के चलते उनके विरुद्ध थे। मगर सत्य के उपासक दयानन्द ने न केवल ईश्वर विश्वास और वेदों के ज्ञान पर भरोसा था।

- शेष पृष्ठ 7 पर

वर्ष 2017 में आयोजित होने वाले उत्सव एवं कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा आयोजित उत्सव/ कार्यक्रम एवं आयोजन

1. महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया (म.प्र.) के नए भवन का उदघाटन एवं वनवासी आर्य महासम्मेलन फरवरी
2. महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट (करेल) का उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय सम्मेलन अप्रैल
3. आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन
4. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा अक्तूबर/नवम्बर
5. महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव, गाजीपुर 21 फरवरी
6. वैचारिक क्रान्ति शिविर मई-जून

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित उत्सव/कार्यक्रम एवं आयोजन

1. ऋषि बोध दिवस - 24 फरवरी
2. आर्यसमाज स्थापना दिवस - 28 मार्च
3. ऋषि निर्वाण दिवस - 19 अक्तूबर
4. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस - 25 दिसम्बर

आर्य वीर /वीरांगना दल के प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर मई /जून
सार्व. आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर मई /जून
प्रान्तीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर, दिल्ली मई / जून
आर्य वीरांगना दल प्रशिक्षण शिविर मई / जून

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित उत्सव/कार्यक्रम एवं आयोजन

1. यज्ञ विज्ञान कार्यशाला - 1 जनवरी
2. विश्व पुस्तक मेला - 7-15 जनवरी
3. आर्य विद्या परिषद् बैठक - 18 जनवरी
4. 17वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन 22 जनवरी
5. अधिकारी पारिवारिक सहभोज - 26 जनवरी
6. महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर भजन संध्या 21 फरवरी
7. होली मंगल मिलन समारोह 12 मार्च
8. आर्य विद्या परिषद् - अध्यापक कार्यशाला मई एवं जुलाई
9. स्वाध्याय शिविर, पौंधा 29 मई -4 जून
10. विश्व पर्यावरण सप्ताह 5 से 11 जून
11. आर्यसमाज सेवक गोष्ठी 2 जुलाई
12. 18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन 9 जुलाई
13. आर्य विद्या परिषद् विद्यालय वार्षिकोत्सव 22 जुलाई
14. आर्य महिला सम्मेलन अगस्त
15. गुरु विजारन्द दिवस समारोह 14 सितम्बर
16. यज्ञोत्सव समारोह

नोट : 1. अज्ञात परिस्थितियोंवश कार्यक्रमों की तिथि में परिवर्तन सम्भव है।

2. समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि वे उपरोक्त सभी आयोजनों की तिथियों को अपनी डायरी में नोट कर लें। कृपया अपने आर्यसमाज के कार्यक्रमों को निश्चित करते समय उपरोक्त कार्यक्रमों की तिथियों को दृष्टिगत रखें। सभी कार्यक्रमों अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं एवं तन-मन-धन से सहर्ष सहयोग प्रदान करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

विश्व पुस्तक मेला - 7 जनवरी से 15 जनवरी, 2017 प्रगति मैदान, नई दिल्ली में

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

1.	आर्यसमाज हनुमान रोड	21000	7.	श्री राजेन्द्र दुर्गा जी	5100	13.	आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी	5000
2.	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2	20000	8.	श्री सतपाल भरारा जी	5100	14.	आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन	5000
3.	आर्यसमाज पंखा रोड जनकपुरी	11000	9.	आर्य समाज नजफगढ़,	5000	15.	आर्य समाज कालकाजी	4000
4.	आर्यसमाज पंजाबी बाग (प.)	11000	10.	आर्यसमाज आर्यनगर पहाडगंज	5000	16.	श्री ईश्वर चन्द्र खन्ना	2100
5.	आर्यसमाज डी. ब्लाक विकासपुरी	11000	11.	आर्यसमाज पूर्वी कैलाश	5000	17.	श्री अशोक गुप्ता	2000
6.	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1	10000	12.	आर्यसमाज विवेक विहार	5000	18.	आर्य समाज किदवई नगर	2000
19.	आर्य समाज मानसरोवर पार्क	2000						
20.	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	2000						
21.	श्री करण सिंह तंवर	1100						
22.	आर्य समाज शाह.-मुहम्मदपुर	1100						
23.	डॉ. मुकेश आर्य	1100						

- क्रमशः

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

आर्य समाज की चर्चाओं ने मुझे आर्य समाजी बना दिया

- आर्य मुनि वानप्रस्थ

मैं 75 वर्षीय हरिराम आर्य ग्राम ललरिया तह. वैरसिया जिला भोपाल का निवासी हूं। ग्राम ललरिया भोपाल जिले का बड़ा ग्राम है यहां पर 80 प्रतिशत मुस्लिम आबादी है। जब मैं 17-18 वर्ष का था मैं ग्राम के मिडिल स्कूल में पढ़ने जाता था। उस समय हमारे ग्राम में श्री गौरी शंकर जी कौशल उनके मामाजी के यहां आया करते थे जो भोपाल में रहते थें वे आर्यवीर दल का प्रचार करते थे। गौरी शंकर कौशल जी कभी कभी हमारे घर भी आते थे क्योंकि उनकी माता जी ने मेरे पिताजी को राखी बांधी थी। इस कारण उनसे घरेलू सम्बन्ध हो गये थे।

कौशल जी आर्य समाज की चर्चा किया करते थे हम उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनते थे। धीरे-धीरे उनकी बातों का हम पर प्रभाव पड़ा और कुछ दिन बाद हमने कुछ युवकों के साथ मिलकर ग्राम में संध्या शाखा प्रारम्भ कर दी। उस समय आर्य वीर दल के प्रचारक श्री विश्व मित्र जी, मेधावी स्वामी सवनिन्द जी मन्दसौर, श्री विजय सिंह जी विजय आदि विद्वान आते थे। इसके बाद ग्राम में आर्य समाज की स्थापना की गई आर्य सामज भवन उस समय कच्चा था। ग्राम ललरिया में आर्य समाज के यज्ञ आदि कई कार्यक्रम होते थे जिसमें आर्य विद्वान आते थे जिनमें प्रमुख थे- श्री ओम प्रकाश त्यागी, पं. वीर सेन वेदश्रमी, पं. राजगुरु शर्मा, आचार्य कृष्ण जी आदि।

हमने ललरिया में आर्य मंदिर दो मंजिला पक्का बनवाया उसमें प्रतिदिन लाउड स्पीकर से संध्या होती है। इसके साथ ग्राम के बाहर रोड पर हमने अपनी निजी भूमिदान में देकर एवं न्यास बनाकर संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की है। हमने 10 वर्ष पूर्व वानप्रस्थ ले लिया था उसके बाद से हम विद्यापीठ में ही निवास कर रहे हैं एवं बच्चों को संस्कारित करना एवं वैदिक धर्म का प्रचार कर रहा हूं। वानप्रस्थ लेने पर हमारा नाम आर्य मुनि वानप्रस्थ हो गया है। विद्यापीठ में पुस्तकालय है जिसमें चारों वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, वैदिक सम्पत्ति स्वामी जी के समस्त ग्रन्थ एवं अनेक विद्वानों के लिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं। हम हॉलैण्ड, बेल्जियम, फ्रान्स आदि देशों की यात्रा भी की। हमने आर्य समाज की कृपा से अपना एवं अपने परिवार का जीवन सफल किया है।

- ग्राम ललरिया, भोपाल (म.प्र.)

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है-

'सम्पादक' - साप्ताहिक आर्य सन्देश,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 email : aryasabha@yahoo.com

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

We invoke You for food, we invoke You for vigour.

While the poetic Rigveda, the first Text of the Source Book of revealed knowledge, begins with a verse expressing reverential salutations to the Creator and Protector of the endless cosmic creation of the mysterious Universe, the opening words of the next divine Text, Yajurveda which states divine formulae for excelent performances (Yajna) starts with spontaneous invocation for food, vigour and sound body organs. This is natural as true knowledge achieves fruition when applied for individual and social development. Noble action demands a sound body and a firm mind.

"We invoke you, O Creator Lord, for our food. We invoke you for our vigour. May we have honest desires and also adequate strength to get success. O inner selfs, may the Merciful God depute you for the noblest accomplishment. May He invigorate your body organs keeping them free from defects and diseases. O organs of the body, be not a prey to evil temptations. May the Soul, your master, protect you for attainment of prosperity and eternal bliss."

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावती रनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माथशॅंसो धुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।। (Yv. I.1)

Ise tvorje tva vayava stha devo vah savita prarpayatu sresthatmaya karmana apyaya dhvama ghnya indraya bhagam prajavatiranamiva ayaksma ma va stena isata maghasamsodhruva asmin gopatau syata bahvirya jamanasya pasunpahi..

O Supreme Savior!

"Preserve my life. Preserve my life-breath. Protect my outbreath. Protect my through-dreath. Preserve my vision. preserve my audition. Strengthen my speech. Gladden my mind. Guard my soul. Show me the light, O Supreme Saviour".

The chronology and the spirit of prayer are heart-touching. The devout aspirant offers sincere gratitude to the Lord of Creation. His life should be long life is a burden if laggard and inactive. He, therefore, invokes the Lord who incessantly blows medicinal baalm into the body for invigorating his breath. Breath is the sincere servant that cleans the body selflessssly. Next is fervent prayer that strengthens the power of seeing and hearing. These two typify all the sense organs of the body which maintain harmony between the physical structure of the body and the vast Universe. Coming next in order is the speech organ that is the privilege of man enabling him to communicate his feelings. May God empower his faculty of speaking. Next in order is the wandering mind which is to be disciplined. The last or ultimate prayer is to guard his soul, the lower self, which is His immortal prototype within man in whom He dwell.

आयुर्मे पाहि प्राण मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे पाहि वाचम्मे पिन्व मनो मे जिन्वात्मानम्मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ।। (Yv. XIV.17)

Ayurme pahi, pranam me pahi, apanam me pahi, vyanam me pahi, caksurme pahi, srotram me pahi, vacam me pinva, mano me jinvatmanam me pahi, jyotirme yaccha..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

प्रथम पृष्ठ का शेष — बंगाल ! जारी है हिंसा और ....

इसी कड़ी में अब धूलागढ़ का नाम भी जुड़ गया है।

राज्य सरकार को स्मरण होगा कि कोलकाता के एक मौलवी ने मांगे पूरी न होने पर उन्हें कैसे धमकाया गया था। थोड़े दिन पहले ही कालिग्राम और चांचल में हिंसा को रोकने वाले पुलिस वालों और जिलाधीश को किस प्रकार पीटा गया और पुलिस स्टेशन को लूट लिया गया था, शायद यह इनकी मानसिकता का जीता जगाता उदहारण है। जेहादियों पर कार्यवाही करने में अक्षम सरकार पीड़ित हिन्दुओं पर ही झूठे मामले दर्ज कर खानापूर्ति कर रही है। हाल के दिनों में पश्चिम बंगाल से सटे बांग्लादेश से एक रिपोर्ट के अनुसार खबरें आ रही थीं कि जेहादी मानसिकता से ग्रस्त लोगों के द्वारा की जा रही हिंसा से रोजाना 632 हिन्दू बांग्लादेश छोड़ रहे हैं। जोकि भारत में अपने लिए सुरक्षित स्थान खोज रहे हैं। अब सवाल यह है कि यदि वो बांग्लादेश छोड़कर भारत में बसते हैं तो उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी कौन लेगा? क्योंकि राजनीति के तुष्टीकरण के कारण भारत में ही भारतीय हिन्दुओं के हितों पर ही तलवार सी लटकती दिखाई दे रही है।

कश्मीर से पंडित निकाले गये! राजनीति मौन रही। केरल में साम्प्रदायिकता का सरेआम तांडव हुआ! सब खामोश रहे। कैराना पर राजनितिक दलों ने वहां के हिन्दुओं के पलायन को राजनीति से प्रेरित बताकर अपना वोट बैंक साधा! सब चुप रहे। लेकिन कब तक? एक-एक कर क्षेत्र पर क्षेत्र खाली हो रहे हैं यह तुष्टीकरण की राजनीति है या झूठी धर्मनिरपेक्षता का शोर कब तक सन्नाटे से निकलती सिसकियों को दबाएगा। क्या अब राजनेताओं और धर्मनिरपेक्ष दलों को नहीं समझ जाना चाहिए कि इन जेहादियों को अपनी मनमानी करने के लिए एक सुरक्षित क्षेत्र की तलाश है? दुनिया के किसी भी हिस्से में इनका लोकतंत्र में विश्वास नहीं है और ना ही संविधान के ध र्मनिपेक्षता के ढ़ांचे का ख्याल। ये लोग सिर्फ एक पुरातन परम्परा जो इनकी नहीं बल्कि इन पर जबरन लाधी गयी है उसका बचाव हिंसक तरीके से कर रहे हैं।

हमेशा सच्चे लेखन पर लेखक का धर्म तलाशा जाता है लेकिन यहाँ तो तुफैल अहमद जैसे निर्भीक विचार रखने वाले मुस्लिम विद्वान खुद लिख रहे हैं कि इस्लाम के मानने वाले एक बड़े वर्ग को मजहब नहीं अपने लिए एक क्षेत्र की तलाश है। तुफैल लिखते हैं कि जब मक्का में गैर मुस्लिमों ने प्रोफेट मोहम्मद से कहा कि आप और हम मक्का में साथ-साथ रह सकते हैं, किन्तु मोहम्मद ने कहा यह नहीं हो सकता, आपका धर्म अलग है, रहन-सहन अलग है, हम साथ नहीं रह सकते और यहीं से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत का जन्म हुआ। वहां अब कोई जूं नहीं बचे, न कोई यहूदी बचे। ईरान में पारसी नहीं बचे, अफगानिस्तान में, बलूचिस्तान में, पाकिस्तान में कहीं हिन्दू नहीं बचे। लाहौर सिक्ख महानगर था, अब नहीं है। वही क्रम आज भी जारी है। कश्मीर में, कैराना में, केरल में, प.बंगाल में क्या हो रहा है? मेरे पास केवल सवाल हैं, जबाब नहीं।

-राजीव चौधरी

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 18

गतांक से आगे....

उप पद चतुर्थी विभक्ति

१.नमः - **नमस्कार करना** - गुरवे नमः। गुरु जी को नमस्कार है।
२.स्वस्तिः - **कल्याण** - सर्वेभ्यः स्वस्ति। सबका कल्याण हो।
३.स्वाहा - **आहुति** - अग्नये स्वाहा। अग्नि के लिए आहुति है।
४.क्रुध - **क्रोध** - रामः रावणाय क्रुध्यति। राम रावण पर क्रोध करते हैं।
५.द्रुह - **द्रोह करना** - विभीषणः रावणाय अद्रुह्यत। विभीषण ने रावण से द्रोह किया।
६.दा - **देना** - अहम् निर्धनाय दानं ददामि। मैं गरीबों को दान देती हूं।
७.ईर्ष्य - **ईर्ष्या जलन करना** - बाली सुग्रीवाय इर्ष्यति। बाली सुग्रीव से ईर्ष्या करता है।
८.असूय - **निंदा करना** दुर्योधनः पांडवेभ्यः असुयति। दुर्योधन पांडवों की निंदा करता है।

- क्रमशः - आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग — उत्तर प्रदेश के एक ग्राम में

एक बार स्वामीजी प्रसिद्ध आर्यविद्वान् पण्डित रघुवीरसिंह शास्त्री के ग्राम बावली जिला मेरठ की आर्यसमाज के उत्सव पर गये। बहुत शीत पड़ रही थी। पहुँचने का समय निश्चित नहीं था। गाड़ी ने देर से रात को उस ग्राम में पहुँचाया। वहीं कड़ाके की सर्दी में अपनी लोई ओढ़कर बैठे रहे। किसी से पण्डाल का अता-पता न पूछा। प्रातःकाल पण्डाल में पहुँचे तो सबको आश्चर्य हुआ। पता चला कि महाराज रातभर स्टेशन पर बैठे रहे। किसी को कष्ट क्यों देना है। पण्डित चमूपतिजी ने एक आर्य यति की साधना पर एक कविता लिखी थी-

'अहो! सारी रात काटी शीत में'।

श्री स्वामीजी यति के सदाचार की घटना सुनाते हुए सदा यह पद सुनाया करते थे। न जाने स्वयं इस यतिराट् ने कितना रातें वेद-प्रचार देशरक्षा वा समाज-सेवा के लिए कड़ी सर्दी में ऐसे ही बिताई।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाजों के इतिहास प्रकाशन सम्बन्धी सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की 18 दिसम्बर 2016 को आयोजित हुई अन्तरंग सभा में निर्णय लिया गया है कि दिल्ली की जिन आर्य समाजों का इतिहास सभा को प्राप्त हो चुका है उनका प्रकाशन होली के अवसर पर प्रकाशित कर दिया जावे तथा जिनका इतिहास अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुआ है यदि उनका इतिहास हमें 15 जनवरी 2017 तक प्राप्त हो जाता है तो उसे भी इस पुस्तिका में सम्मिलित कर लिया जाए। इसके बाद प्राप्त होने वाली इतिहास सामग्री को इस पुस्तिका में सम्मिलित कर पाना संभव नहीं होगा।

अत: दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से पुन: अनुरोध है कि यदि आपने अपने समाज का इतिहास अभी तक सभा कार्यालय में नहीं भेजा है तो कृपया आप अपने समाज का इतिहास तुरंत लिखकर अपने आर्य समाज मंदिर की सुंदर फोटोग्राफ्स, वर्तमान अधिकारियों के चित्र और उनका परिचय संक्षिप्त लिखकर सभा कार्यालय -15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001 में तत्काल पहुंचाने की कृपा करें। -**सम्पादक**

डॉ. पूर्ण सिंह डबास रिचत पुस्तकों का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

डॉ.पूर्ण सिंह डबास द्वारा रचित और भारत सरकार के आर्थिक अनुदान से मुद्रित 'भारतीय सैन्य शब्दों की रोचक कहानियां', 'हिन्दी में देशज शब्द', 'चरण धूलि इण्टर नेशनल' तथा 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं' पुस्तकों का लोकार्पण एवं विवेचन समारोह अरावली फाउंडेशन फॉर ऐजूकेशन, अनन्य प्रकाशन तथा महाराजा सूरजमल प्रौद्योगिकी संस्थान के सौजन्य से संस्थान के प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर पूर्व डीन ऑफ कॉलेजेज़ डॉ. एस.एस. राणा, प्रो. नित्यानन्द तिवारी, श्री सुधीर सक्सेना (सम्पादक 'दुनिया इन दिनों'), प्रो. अजय तिवारी, डॉ. नरेन्द्र शुक्ल, सूरजमल स्मारक शिक्षा समिति के अध यक्ष श्री एस. पी. सिंह ने पुस्तक का लोकार्पण करते हुए इसके विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन युवा समीक्षक श्री आशीष मिश्र ने किया। श्री सुधीर सक्सेना ने पुस्तक के विभिन्न पक्षों को उजागर करते हुए कहा कि यह पुस्तक साहित्य भी है, भाषा-विज्ञान भी है और शब्द कोश भी है। वस्तुत: यह शब्द-योजना से शब्दकोश तक का सफर है। ऐसे खोज पूर्ण कार्य के लिए डॉ. डबास साधुवाद के पात्र हैं। कार्यक्रम के अन्त में श्री एस.पी. सिंह ने डॉ. डबास के हास्य-व्यंग्य की भी चर्चा की तथा सभी उपस्थित महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया।

'ईश्वर का अस्तित्व : वेद और विज्ञान की दृष्टि में' पर संगोष्ठी

वेद प्रचारिणी सभा नागपुर के तत्त्वावधान में स्व. श्री अनंतलालजी राठी की पावन स्मृति में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन माहेश्वरी भवन, टेकडी रोड, सीताबर्डी, नागपुर में 7 व 8 जनवरी 2017 को किया जा रहा है। संगोष्ठी का विषय है - ईश्वर का अस्तित्व : वेद और विज्ञान की दृष्टि में। संगोष्ठी में श्री स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय रोजड गुजरात, डॉ. रूपचंद्र दीपक, लखनऊ, डॉ. वागीश जी प्राचार्य आर्ष गुरुकुल, एटा, डॉ. सतीशचन्द्र शर्मा, बैंगलोर, डॉ. रामचन्द्र कुरुक्षेत्र, श्री श्याम लढ्ढा, नागपुर, श्री ज्योतिरावजी लढके, नागपुर, श्री प्रकाश शेष एवं कु. द्विव्या शर्मा दिव्यदर्शिनी बैंगलोर से भाग लेंगे और अपने विचारों से आर्यजनता को सम्बोधित करेंगे। - **उमेश राठी**

वर चाहिए

कविता शर्मा (तलाकशुदा), 33 वर्ष, लम्बाई 5'4'', गोत्र: भारद्वाज, मुदगल, एम.ए., बी.एड. हेतु शिक्षित, सेवारत/ व्यवसायी वर चाहिए। सम्पर्क करें -

- ओम प्रकाश शर्मा, दिल्ली
मो. 09899996310, 09999354995

पृष्ठ 4 का शेष

इस घटना का महिमामंडन शिकागो भाषण के समान किया जाता तो आज हिंदुओं की संतान मुस्लिम पीरों और कब्रों पर सर न पटक रही होती। क्योंकि वेदों के सत्य ज्ञान का प्रकाश होता जिससे समाज का हित होता।

इतने भारी सैद्धांतिक भेद होने के कारण भी स्वामी दयानन्द के स्थान पर स्वामी विवेकानन्द का महिमामंडन करना हिन्दू समाज को शोभा नहीं देता। दयानन्द केवल और केवल सत्य के उपासक है। जबकि विवेकानन्द सुनियोजित छवि निर्माण (Planned Marketing) के उत्पाद हैं। आज हिन्दू समाज स्वामी दयानन्द के विचारों से स्वाध्यायशील न होने के कारण परिचित ही नहीं है। उन्हें कोई भी स्वामी दयानन्द के विरुद्ध यह कहकर भ्रमित कर देता है कि स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा और पुराणों का विराध करते थे। इसलिए उनकी मन सुनिये। वे आंख बंदकर तत्काल उन पर विश्वास कर लेते हैं। इसी प्रकार से कोई स्वामी विवेकानन्द को सबसे बढ़िया कहकर उनका महिमामंडन कर देता है। वे आंख बंदकर तत्काल उन पर भी विश्वास कर लेते हैं। यह पुराना रोग है।

हिन्दू समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक व्याधि का उपचार केवल और केवल स्वामी दयानन्द की कड़वी दवाई है। जिसे लेने से वह सदा हिचकता रहता है।

मैंने अपनी क्षमता से अपने विचार प्रकट किये हैं। पाठक अपनी योग्यतानुसार निर्णय करें कि स्वामी दयानन्द को उनका वास्तविक स्थान और मान हिन्दू समाज क्यों न दे ?

15 जनवरी के स्थान पर अब 22 जनवरी को होगा

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

17वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 22 जनवरी, 2017 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए, जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता है तथा नीचे इसी पृष्ठ पर प्रकाशित भी किया गया है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भी कर सकते हैं।** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक **(मो. 9414187428)**

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली **(मो. 9540040324)**

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता .....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....

दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....

8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग : ☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: .....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नई दिल्ली 15 जनवरी 2017

परिचय सम्मेलन 15 जनवरी 2017, रविवार, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज 1,F-5 नई दिल्ली-110052 में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्डा (09414187428) अथवा दिल्ली के संयोजक श्री एस. पी. सिंह (09540040324) श्री प्रेम सबदेवा, प्रधान आर्य समाज अशोक विहार (09811122320), श्री जीवन लाल आर्य-मंत्री-अशोक विहार (09718965775) से सम्पर्क करें।

नोट :1. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
2. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
3. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। **फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।** यहफार्म ऑनलाइन भी भर सकते हैं लिंक matrimony.thearyasamaj.org
4. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट प्रति सम्मेलन के हिसाब से संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
5. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लेकर लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन स्कूल' धनश्री (असम), बामनिया (म.प्र.) तथा अन्य संस्थानों के लिए लिए मैनेज़र/ केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आर्यसमाजी पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी, पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha @yahoo.com पर ई मेल करें या चेयरमैन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।

- महामन्त्री

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 दिसम्बर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 दिसम्बर 2016

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा चुनाव सम्पन्न

मा. रामपाल जी प्रधान एवं आचार्य योगेन्द्र आर्य मन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का त्रैवार्षिक निर्वाचन रविवार 11 दिसम्बर, 2016 को सम्पन्न हुआ जिसमें **प्रधान : मा. रामपाल आर्य जी**, **उप प्रधान** : कन्हैयालाल आर्य, **मन्त्री : आचार्य योगेन्द्र आर्य, उपमन्त्री** : उमेद शर्मा एवं **कोषाध्यक्ष : श्रीमती सुमित्रा आर्या जी** को निर्वाचित घोषित किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित सभी पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

मा. रामपाल आर्य
प्रधान

आ.योगेन्द्र आर्य
मन्त्री

श्रीमती सुमित्रा आर्या
कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश चुनाव सम्पन्न

एडवोकेट श्री प्रबोध चन्द्र सूद जी पुनः प्रधान, श्री रामफल आर्य वरिष्ठ उप प्रधान एवं डॉ. करम सिंह आर्य महामन्त्री बने

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का त्रैवार्षिक चुनाव 18 दिसम्बर 2016 को आर्य समाज, बिलासपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें **एडवोकेट श्री प्रबोध चन्द्र सूद** को पुनः सर्वसम्मति से **प्रधान** चुना गया। सुन्दर नगर से **श्री रामफल आर्य जी** को **वरिष्ठ उप प्रधान** एवं शिमला के **डॉ. करम सिंह आर्य जी** को **महामंत्री** निर्वाचित किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित सभी पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

श्री पी.सी. सूद
प्रधान

श्री रामफल आर्य
व. उप प्रधान

श्री करम सिंह आर्य
महामन्त्री

कैलेण्डर वर्ष 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
मूल्य 1200/–रुपये सैकड़ा
200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011–23360150, मो. 09540040339

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह